श्री पार्श्वनाथ पूजन

(कविवर बख्तावरमलजी कृत)

सर्वोदय अहिंसा

सर्वः सर्वत्र नन्दतु

(हरिगीतिका)

वर स्वर्ग प्राणत को विहाय, सुमात वामा-सुत भये।
अश्वसेन के पारस जिनेश्वर, चरण तिनके सुर नये।।
नौ हाथ उन्नत तन विराजै, उरग-लक्षण अति लसैं।
थापूँ तुम्हें जिन आय तिष्ठो, कर्म मेरे सब नसैं।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्व: सर्वत्र नन्दतु

सर्वोदय अहिंसा
सर्व: सर्वत्र नन्दतु

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट्।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

क्षीर सोम के समान अम्बु-सार लाइए।
हेम-पात्र धार के सु आपको चढ़ाइए॥
पार्श्वनाथ देव सेव आपकी करूँ सदा।
दीजिए निवास मोक्ष भूलिए नहीं कदा॥

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

चन्दनादि केसरादि स्वच्छ गन्ध लीजिए।
आप चर्न चर्च मोह-ताप को हनीजिए॥
पार्श्वनाथ देव सेव आपकी करूँ सदा।
दीजिए निवास मोक्ष भूलिए नहीं कदा॥

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

फेन चन्द के समान अक्षतं मँगाय के।
चर्ण के समीप सार-पुंज को रचाय के।।
पार्श्वनाथ देव सेव आपकी करूँ सदा।
दीजिए निवास मोक्ष भूलिए नहीं कदा।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

केवड़ा गुलाब और केतकी चुनाइए।
धार चर्ण के समीप काम को नशाइए।।
पार्श्वनाथ देव सेव आपकी करूँ सदा।
दीजिए निवास मोक्ष भूलिए नहीं कदा।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

घेवरादि बावरादि मिष्ट सद्य में सनें।
आप चर्ण चर्च तैं क्षुधादि-रोग को हनें।।
पार्श्वनाथ देव सेव आपकी करूँ सदा।
दीजिए निवास मोक्ष भूलिए नहीं कदा।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लाय रत्न-दीप को सनेह-पूर के भरूँ।
बातिका कपूर वार मोह-ध्वान्त को हरूँ॥
पार्श्वनाथ देव सेव आपकी करूँ सदा।
दीजिए निवास मोक्ष भूलिए नहीं कदा॥

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

धूप गन्ध लेय कैं सुअग्नि संग जारिए।
तास धूप के सु संग कर्म अष्ट बारिए।।
पार्श्वनाथ देव सेव आपकी करूँ सदा।
दीजिए निवास मोक्ष भूलिए नहीं कदा।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

खारकादि चिर्भटादि रत्न-थार में भरूँ।
हर्ष धार कैं जजूँ सुमोक्ष सौख्य को वरूँ।।
पार्श्वनाथ देव सेव आपकी करूँ सदा।
दीजिए निवास मोक्ष भूलिए नहीं कदा।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीर गन्ध अक्षतान् सुपुष्प चरु लीजिए।
दीप धूप श्रीफलादि अर्घ्यतैं जजीजिए।।
पार्श्वनाथ देव सेव आपकी करूँ सदा।
दीजिए निवास मोक्ष भूलिए नहीं कदा।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पार्श्वनाथ भगवान
गर्भ कल्याणक
अर्घ्य

शुभ प्राणत स्वर्ग विहाये,
वामा माता उर आये।
वैशाखतनी दुति कारी,
हम पूजें विघ्न-निवारी।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय
वैशाखकृष्णद्वितीयायां
गर्भकल्याणकप्राप्ताय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पार्श्वनाथ भगवान
जन्म कल्याणक
अर्घ्य

जनमे त्रिभुवन–सुखदाता,
एकादशि पौष विख्याता।
श्यामा–तन अद्भुत राजे,
रवि–कोटिक–तेज सु लाजे।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय
पौषकृष्णैकादश्यां
जन्मकल्याणकप्राप्ताय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

श्री पार्श्वनाथ भगवान

तप कल्याणक

अर्घ्य

कलि पौष इकादशि आई,
तब बारह भावन भाई।
अपने कर लौंच सुकीना,
हम पूजें चर्न जजीना।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय
पौषकृष्णैकादश्यां
तपकल्याणकप्राप्ताय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पार्श्वनाथ भगवान

ज्ञान कल्याणक

अर्घ्य

कलि चैत चतुर्थी आई,
प्रभु केवलज्ञान उपाई।
तब प्रभु उपदेश जु कीना,
भवि जीवन को सुख दीना।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय
चैत्रकृष्णचतुर्थ्यां
ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

श्री पार्श्वनाथ भगवान

मोक्ष कल्याणक

अर्घ्य

सित सातैं सावन आई,
शिव-नारि वरी जिन राई।
सम्मेदाचल हरि माना,
हम पूजें मोक्ष-कल्याना।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय
श्रावणशुक्लसप्तम्यां
मोक्ष कल्याणकप्राप्ताय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्व: सर्वत्र नन्दतु

जयमाला
(कवित्त)

पारसनाथ जिनेन्द्रतने वच पौनभखी जरते सुन पाये।
करो सरधान लह्यो पद आन भये पद्मावति-शेष कहाये।।
नाम प्रताप टरे सन्ताप सुभव्यन को शिव-शर्म दिखाये।
हो अश्वसेन के नन्द भले गुण गावत हैं तुमरे हरषाये।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

(दोहा)

केकी-कण्ठ समान छबि, वपु उतंग नव हाथ।
लक्षण उरग निहार पग, वन्दूँ पारसनाथ।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

(मोतियादाम छन्द)

रची नगरी षट् मास अगार, बने चहुँ गोपुर शोभ अपार।
सु कोटतनी रचना छबि देत, कँगूरन पै लहकैं बहु केत।।
बनारस की रचना जु अपार, करी बहु भाँत धनेश तैयार।
तहाँ अश्वसेन नरेन्द्र उदार, करैं सुख वाम सु दे पटनार।।

तज्यो तुम प्राणत नाम विमान, भये तिनके घर नन्दन आन।
तबै सुर इन्द्र नियोगनि आय, गिरीन्द्र करी विधि न्होन सु जाय।।
पिता घर सौंप गये निज धाम, कुबेर करे वसु याम जु काम।
बढ़े जिन दूज मयंक समान, रमैं बहु बालक निर्जर आन।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

भये जब अष्टम वर्ष कुमार, धरे अणुव्रत महा सुखकार।
पिता जब आन करी अरदास, करो तुम ब्याह वरो मम आस।।
करी तब नाहिं रहे जगचन्द, किये तुम काम कषाय जु मन्द।
चढ़े गजराज कुमारन संग, सु देखत गंगतनी सुतरंग।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

लख्यो इक रंक करे तप घोर, चहूँ दिस अगनि बले अतिजोर।
कहे जिननाथ अरे सुन भ्रात, करे बहु जीवतनी मत घात।।
भयो तब कोप कहै कित जीव, जले तब नाग दिखाय सजीव।
लख्यो यह कारण भावन भाय, नये दिव-ब्रह्म-ऋषी सुर आय।।

तबै सुर चार प्रकार नियोग, धरी शिविका निज-कन्ध मनोग।
कर्‍यो बन माहिं निवास जिनन्द, धरे व्रत चारित आनन्द-कन्द।।
गहे तहाँ अष्टम के उपवास, गये धनदत्त तनें जु अवास।
दियो पयदान महा सुखकार, भई पन वृष्टि तहाँ तिह वार।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

गये फिर कानन माहिं दयाल, धर्‍यो तुम योग सबै अघ टाल।
तबै वह धूम सुकेत अयान, भयो कमठाचर को सुर आन।।
करैं नभ गौन लखे तुम धीर, जु पूरब बैर विचार गहीर।
कर्‍यो उपसर्ग भयानक घोर, चली बहु तीक्षण पवन झकोर।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

रह्यो दशहूँ दिश में तम छाय, लगी बहु अग्नि लखी नहिं जाय।
सुरुण्डन के बिन मुण्ड दिखाय, पड़े जल मूसल धार अथाय।।
तबै पद्मावति कन्त धरणेन्द, चले जुग आय तहाँ जिनचन्द।
भग्यो तब रंक सु देखत हाल, लह्यो तब केवलज्ञान विशाल।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

दियो उपदेश महाहितकार, सुभव्यन बोधि सम्मेद पधार।
सुवर्णभद्र जहँ कूट प्रसिद्ध, वरी शिवनारि लही वसु ऋद्ध।।
जजूँ तुम चर्ण दोऊ कर जोर, प्रभू लखिये अब ही मम ओर।
कहैं ‘बखतावर’ रतन बनाय, जिनेश हमें भव-पार लगाय।।

(घत्ता)

जय पारस-देवं, सुर-कृत सेवं, वन्दत चरण सुनागपती।
करुणा के धारी, पर-उपकारी, शिव-सुखकारी कर्म हती॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय गर्भजन्मतपोज्ञाननिर्वाणपंचकल्याणकप्राप्ताय जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

(रोला)

जो पूजै मन लाय, भव्य पारस प्रभु नित ही।
ताके दुख सब जाँय, भीति व्यापै नहिं कित ही।।
सुख-सम्पत्ति अधिकाय, पुत्र-मित्रादिक सारे।
अनुक्रम सों शिव लहे, 'रतन' इम कहें पुकारे।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)